खैय्याम साहब द्वारा निर्देशित गैर फिल्मी गीतों का सौंदर्यात्मक विश्लेषण

रंजना रानी
सहायक प्रोफेसर
दशमेश महिला विद्यालय, मुकरियाँ

फिल्म संगीत के महान तथा उच्च कोटि के संगीतकार खैय्यामसाहब द्वारा रचित संगीत के अनेक प्रशंसक रहे है। जिन्होंने फिल्म 'फुटपाथ', 'शोला और शबनम', 'फिर सुबह होगी', 'लाल रूख', 'कभी–कभी', शंकर हुसैन, 'शगुन', 'उमराव जान', 'रजिया सुल्तान' आदि जैसे कई फिल्मों में दिल को छू जाने वाला संगीत दिया। ऐसा संगीत जो आज तक लोगों के हृदय पर अमिट छाप तथा प्रभाव बनाए हुए है। फिल्म संगीत के साथ–साथ खैय्याम जी ने अनेक कलाकारों के साथ गैर–फिल्मी गीतों में भी अपनी रचनात्मकता का जादू बिखेरा। हालांकि खैय्याम जी को 70–80 के दर्शक का संगीतकार माना जाता है, परन्तु वास्तव में उनके संगीत निर्देशन का प्रारम्भ 1948 में प्रदर्शित फिल्म 'हीर रांझा' से हुआ। उनके गीतों में एक नयापन एक अलग अन्दाज शुरू से ही छलकता था जैसे फिल्म फुटपाथ का गीन' शामे गम की कसम' जो कि एक अलग सा एहसास उत्पन्न करता है लेकिन खैय्याम जी ने कार्य हमेशा अपनी भार्तो के अनुसार किया जिस कारण उन्हें अपने आरम्भिक दिनों में आर्थिक तंगी का भी सामना करना पड़ा। खैय याम जी अपने असूलों पर अडिग रहे और ऐसे समय में उन्होंने अपना समय गैर फिल्मों गीतों की रचनाओं में उपयोग किया।

कहा जाता है जब भाग्य कोई दरवाजा बन्द कर देता है तो वह अन्य रास्ता भी दिखाता है ऐसा ही खैय्याम साहब के साथ भी हुआ। 1950 के समय के आस–पास वे बेहद मशहूर गायक 'तलत अजीज' जी की गायकी से बहुत प्रभावित थे और उन्होंने खास तौर पर तलत जी के लिए दो घुनें बनाई जिसे सुनकर तलत जी बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने खैय्याम जी से कहा कि वे HMV कम्पनी को यह गीत रिकार्ड करने को कहेंगे। ये दो गीत थे 'आ गई फिर से बहारें आ गई', ''रो–रो बीता जीवन सारा''। ये गीत तलत जी की मुलायम तथा मखमली आवाज में रिकार्ड किए गए जो बहुत ही सराहे गए। इसके पश्चात खैय्याम जी ने तलत जी के लिए कई गाने रिकार्ड किए।

इसी तरह रफी जी के साथ भी उन्होंने बेमिसाल कार्य किया। जिसके बारे में खैय्याम जी ने इन्टरव्यू में बताया कि रफी जी अक्सर उन्हें अपने घर दावत पर बुलाते। एक दिन रफी साहब के भाई 'हमीद जी' ने कहा खैय्याम साहब, एक काम आप रफी साहब के लिए कर दीजिए रफी साहब को कुछ बना दीजिए, वो आप ही कर सकते है। खैय्याम जी ने कहा कि रफी साहब इतने बडे फन्कार है, मैं उनके लिए क्या कर सकता हूं।

तो वो कहने लगे कि जिस रविश से ये गाना गाते है इस से जरा हट कर मिठास गले में और आ जाए, कुछ इस तरह का कम्पोज कीजिए और मैने कहा कि मैं जरूर आपके लिए काम करूगा। लेकिन जब में आपके लिए चीजें बनाऊंगा तो कुछ ऐसे सिखाऊंगा जैसे आप 7–8 साल के बच्चे है और मुझसे सीख रहे है। आवाज में कौन सा हिस्सा अपने जिस्म का इस्तेमाल करें तो अपकी आवाज में बदलाव आएगा। उन्होंने कहा हां मैं करूंगा। ऐसा ही हुआ, जब रफी जी की प्रैक्टिस शुरू हुई तो 8 रिहर्सल/2 घंटे पर से ान तक हुई। जिससे उनकी टोनल क्वालिटी में जो फर्क आया उसे सभी ने महसूस किया। रफी जी ने खैययाम जी के साथ कई गजलें रिकार्ड की जिनमें एक से बढकर एक गजल में रफी साहब की गायकी का जादू महसूस किया जा सकता है। जिनमें कहीं उनकी सधी हुई शास्त्रीय गायकी का प्रभाव अचम्भित करने वाला है। राग पूरिया धनाश्री मैं बंधी रचना ''मुद्दत हुई है यार को मेहमां किए हुए' में रफी जी की शास्त्रीय गायिकी का प्रभाव है। 'जिक्र उस परीवार का' राग रागेश्वरी का प्रभाव लिए हुए है। नुक्ताची है गमे–दिल' राग दरबारी में, सब गजलों में खैय्याम जी की संगीत के प्रति गहरी समझ और रफी जी की गायकी का सौम्य एवं कोमल स्वरूप उभर कर आया है। इसके अतिरिक्त रफी जी के लिए खैय्याम जी ने भजनों की भी रचना की ''तेरे भरोसे हे नन्दलाल'' (राग पहाडी में) ''मोरे श्याम'' (राग बागेश्वरी पर आधारित), मैं ग्वालों रखवालों मैया आदि कुछ भजनों में भक्ति रस जैसे चरम सीमा को छू रहा है। इसके अतिरिक्त रफी जी ने देश –भक्ति पूर्ण रचनाएं भी गाई जिनमें '' आवाज दो हम एक है'', वतन की आबरू खतरे में है, ''हम अपने वतन में लाएंगे'' आदि गीतों में ओजपूर्ण तथा वीर रस से भरी गायकी है जिसे लोगों मे देशभक्ति का जज्बा जगाने के लिए रचा गया है। जिनमें ''मेरे गीतों का श्रंगार हो तुम'', ''तुम आओ रूमझूम करती'', आदि गीत शामिल हैं।

इसी तरह बेगम अख्तर जी ने स्वयं खैय्याम जी को निमंत्रण दिया कि उनके लिए रचनाएं बनाएं। जब ख़ैय्याम फिल्म 'आखिरी खत' के लिए काम कर रहे थे उस समय उन्हें HMV के मुख्य अधिकारी 'वी0 के दुबे' का फोन आया उन्होंने ख़ैय्याम साहब को बताया कि बेगम साहिबा चाहती है कि आप उनके लिए कुछ गजलों की रचना करे। खैय्याम जी ने उनकी बात पर अधिक ध्यान नहीं दिया। एक दिन जब दोबारा खैय्याम जी से उन्होंने पूछा कि अपने मेरे लिए क्या–2 कम्पोज किया है तो खैय्याम जी इतनी गुणी गायिका को मना ना कर सके और उन्होने उनके लिए बेहतरीन गजलों की रचना की। जब गजलों की रिहर्सल शुरू हुई तो बेगम साहिबा लम्बी बीमारी से उठी थी और वे एक दिन खैय्याम जी से बोली कि मैं जानती हूँ मैं आपकी रचनाओं के साथ पूरा न्याय नही कर रही हूं पर आप मेरी वजह से किसी भी तरह का समझौता न करे। मैं इन गजलों को उसी तरह से गाना चाहती हूँ जैसा आपने उन्हें मेरे लिए बनाया है और उन्होंने पूरे प्रयत्न से फिर से अपने गले को ढाला। इसका परिणाम जो सामने आया उनमे ''वो जो हम में तुम में'', ''मेरे हम नफस'' जैसी कभी न भूलने वाली रचनाएं है जो कि राग दरबारी पर आधारित है। इन गजलों को जिस तरकीब से खैय्याम जी ने रचा है वो सौन्दर्य गजलों में महसूस किया जा सकता है। उपरोक्त दोनो गजलों को रूपक ताल में रचा गया है। इनमें ताल का वैचित्र्य भी अनूठा प्रभाव उत्पन्न करता है। 'राग बिहाग' के कोमल स्वरूप में बंधी गजल 'ई क में गैर ने, जज्बात ने' भी एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करती है।

मीना कुमारी जिन्हें इंडस्ट्री में एक 'ट्रैजडी क्वीन' के रूप में जाना जाता है, बहुत कम लोग जानते हैं। कि वे बहुत अच्छी शायरी करती थी। ख़ैय्याम जी ने उनके कहने पर कुछ रचनाएं की जिन्हें स्वयं मीना जी ने गाया। यह एलबम ' I Write, I Recite' के नाम से रिलीज हुई। ''अकेलेपन के उसी बेकिनार सहरा में'', ''टुकडे–टुकडे दिन बीता'', ''चांद तन्हा है, आसमा तन्हा'' आदि इन रचनाओं को खैय्याम जी ने इस तरह से रचा है कि मानो अकेलेपन का समंदर बह रहा हो और जैसे किसी ने दिल का दर्द शायरी में पिरो कर रख दिया हो। उनका यह एलबम बहुत हिट रहा।

इनके अतिरिक्त महेन्द्र कपूर जी द्वारा कई गजलें गाई गई 'कहूँ जो हाल तो कहते हैं' जो कि राग मारू बिहाग पर आधारित है, 'मैं हूँ मु ताके जफा' (राग मालकौंस में), ''हर कदम दूरिए–मंजिल है ''(राग भैरव पर आधारित) आदि गजलों में एक विलक्षणता सुनने को मिलती है। महेन्द्र कपूर जी ने इन गजलों को बड़ी ही कोमलता व सौम्यता से निभाया है।

मुकेश जी के लिए भी कुछ दर्द भरी गजलों की रचना की जिनमें 'हमसे भागा न करो', 'जरा सी बात पर हर' आदि में जैसे दर्द उभर कर आता है। साथ ही जगजीत कौर के लिए उन्होंने कुछ गुरबानी के शब्दों को स्वरबद्ध किया।

हेमलता जी के साथ उन्होंने कुछ सुगम गीतों की रचना की जिनमें राग बिहाग पर आधारित 'पुकारती है खामोशी मेरी', 'जान जाती दिखाई देती है, 'राज उल्फत का ना हर इक', (राग बिहाग) आदि है। जिनमें हेमलता जी की मीठी आवाज जैसे हतप्रभ करती हुई मीठा सा प्रभाव छोडती है। इन सब गीतों तथा गजलों में कोमलता उभरकर आती है। जैसे एहसासों को स्वरों रूपी माला में बडी शिद्दत से पिरोया गया है।

आशा भौसले जी द्वारा राग पहाडी पर आधारित गीत 'पतिया लिख–2 हारी' गाया गया। राग पहाडी की हरकतों, मुर्कियों का बडा ही सुन्दर प्रयोग इस गीत में सुनने को मिलता हैं। इसके अतिरिक्त सुमन कल्याणपुरी जी द्वारा गीत गाया गया' बरसे बदरवा मतवारे' में भी राग पहाड़ी की मीठी स्वरावलियों का प्रयोग है। राग पहाडी का जितना सुन्दर प्रयोग खैय्याम जी ने अपनी रचनाओं में किया है। उतना शायद ही अन्य किसी संगीतकार ने किया हो। सन 2011 में जगजीत जी के लिए ख़ैय्याम जी ने कुछ भजनों की रचना की जिस में 'राग अहीर भैरव' पर आधारित 'मन के अंधियारे आंगन' जैसी सुन्दर रचना सुनने को मिलती है।

जहां उन्होंने अपने फिल्मी सफर में 54 फिल्मों में संगीत निर्देशन किया वहीं तकरीबन 200 गैर फिल्मी (गीतों, भजनो, गजलो) की रचना कर संगीत प्रमियों को अनमोल भेंट दी फिल्म संगीत जगत में खैय्यान जी एक ऐसे संगीतकार है जिन्होंने गैर फिल्मी गीतों का इतना विशाल खजाना अपने प्रशंसको को दिया। उनके इस अविस्मरणीय योगदान के लिए संगीत जगत सदा उनका आभारी रहेगा।

Reference

1. Khayyam- The man his Music, Vishwas Narurkar, Bishawanath Chattarjee (Compiler & Editor) Through Internet:
2. Guftgu with Khayyam telecasting on Rajya Sabha News Channel.
3. Rear interview of Khayyam Sahab, The Institute of Music in bollywood.
4. www.planetradiocity.com.
5. Khayyam Sahib talk about Rafi (www.youtube.com)